377
277
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 277

17-1

160

भगवान गांधी

अथवा

स्वतन्त्र भारत का बिगुल

(जेल में नज़र बन्द)

प्रकाशक—भगवान गांधी कार्यालय

३३४ कैनिंग स्ट्रीट, लखनऊ।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
24 MAR 1931

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 277
Date 6-12-71
GOVT. OF INDIA

समाज सुधार माला का षष्ठम पुष्प ।

* बन्देमातरम् *

भगवान गांधी

अथवा

स्वतन्त्र भारत का बिगुल

संग्रहकर्ता व प्रकाशक—

ठा० मुन्शीसिंह जी

सम्पादक—"भगवान गाँधी"

२२४ कैनिंग स्ट्रीट, लखनऊ

पुस्तक मिलने का पता—

श्रीयुत सरजूप्रसाद जी वर्मा

राष्ट्रीय ग्रन्थ माला कार्यालय

दालमण्डी फतेहगंज, लखनऊ ।

प्रथमबार २०००

सर्वाधिकार स्वरक्षित ।

सन् १९३० ई०

मूल्य ।)

ओ३म्

ईश्वर-प्रार्थना

भजन

जगदीश यह विनय है जब प्राण तन से निकले।
प्रिय धर्म देश रटते यह प्राण तन से निकले॥
भारत वसुन्धरा पर सुख शान्ति संयुता पर।
शश्याम श्यामला पर यह प्राण तन से निकले॥
देशाभिमान धरते जातीय गान करते।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले॥
भारत का चित्र पर हो युग नेत्र के निकट हो।
श्रीजाह्नवी का तट हो तब प्राण तन से निकले॥

चर्खा चलाके गाँधी भगवान बन गया

अब से है गाँधी का यह स्थान बन गया।
हिन्दोस्ताँ है एक गुलिस्तान बन गया॥

विजयी हुए जो चक्र सुदर्शन चलाके कृष्ण।
चरखा चलाके गांधी भगवान बन गया॥

इनकी नसीहतों पै अमल जिसने कुछ किया।
हैवान से फरिश्ता वो इन्सान बन गया॥

आया था जो गुलामों को आजाद करने को।
वह गांधी भी जेल का मेहमान बन गया॥

नाला जो निकला दिल से वतनके मलाल में।
अर्जुन का तीर राम का वह बान बन गया॥

खद्दर से सच्ची लक्ष्मी पूजा जो की व्रत।
हर एक घर है धाम का स्थान बन गया॥

मंदिरबना स्वराज्यका ऐ 'शौक' अबतो जेल।
मुश्किल जो काम था हमें आसान बन गया॥

घर घर में क्रांति मचायेंगे।

घर २ में क्रांति मचायेंगे।
भारत स्वाधीन बनायेंगे॥

देखो मां का आह्वान हुआ, आजादी का सामान हुआ।
वेदी पर यज्ञ विधान हुआ, फिर मुर्दा जोश जवान हुआ॥

मचला है मन मिट जावेंगे।
भारत स्वाधीन बनायेंगे॥

नव युग के नव उद्गारों को, दुश्मन के प्रबल प्रहारों का।
जंजीरों कारागारों का, स्वागत है अत्याचारों का॥

जीवन का मोह जलायेंगे।
भारत स्वाधीन बनायेंगे॥

गोदी के लाल लुटावेंगी, मातायें बलि बलि जावेंगी।
माथे पर शिकन न लावेंगी, पति को पत्नियां पठावेंगी॥

जालिम सरकार मिटायेंगे।
भारत स्वाधीन बनायेंगे॥

भाइयों और बहिनो आवो, माता का मान बचा जाओ।
प्राणों की आहुति ले धाओ, गांधी का हुक्म बजा लाओ॥

दूषित दासता भगायेंगे।
भारत स्वाधीन बनायेंगे॥

वीरो आओ सुख दुख झेलो, अब उठ आज खुलकर खेलो।
माता की अब आशिश लेलो, मौका है तन मन धन दे लो॥
लंदन तक शीघ्र हिलायेंगे।
भारत स्वाधीन बनायेंगे॥

आजादी ध्येय हमारा है

खादी का बाना पहिन लिया, आजादी ध्येय हमारा है।
आजादी पर मर मिटना है, हमने अब यही विचारा है॥
प्राणों की भेंट चढ़ायेंगे, हम बलि वेदी पर जायेंगे।
आजादी पर मर मिटना है, प्राणों की भेंट चढ़ायेंगे॥१॥
हम अमर, नहीं मरने का डर, यह तो जीवन की राह भली।
हैं शिवा प्रताप गये जिससे, है वीरों की यह वही गली॥
जननी के कष्ट छुड़ायेंगे, हम बलि वेदी पर जायेंगे।
आजादी पर मर मिटना है, प्राणों की भेंट चढ़ायेंगे॥२॥
हम बड़े शौक से पहिनेंगे; पहिनायेंगे जो हथकड़ियां।
जेलों में अलख जगा करके; तोड़ेंगे माता की कड़ियां॥
अन्यायी राज मिटायेंगे, हम बलिवेदी पर जायेंगे।
आजादी पर मर मिटना है, प्राणों की भेंट चढ़ायेंगे॥३॥
भालों तलवारों तोपों से, हम कभी नहीं घबरायेंगे।
हम देश प्रेम मतवाले हैं; अब शूली पर चढ़ जायेंगे॥
भारत स्वाधीन बनायेंगे, हम बलि वेदी पर जायेंगे।
आजादी पर मर मिटना है, प्राणों की भेंट चढ़ायेंगे॥४॥

कल्पना

खुशी के दौर दौरे से है यां रंजो मुहन पहले।
बहार आती है पीछे है खिजाँ गिरदे चमन पहले॥

मुहब्बाने वतन होंगे हजारों के वतन पहले।
फलेगा हिन्द पीछे और मरेगा ऐ हमन पहले॥

अभी मोराज्जका क्या जिक्र यह पहलीही मंजिल है।
हजारों मंजिलें करनी हैं तै हमको कठिन पहिले॥

मुनव्वर अंजमन होती है महफिल गर्म होती है।
मगर जब कि खुद जलतीहै शमए अंजमन पहले॥

जमीने हिन्द भी फूले फलेगी एक दिन लेकिन।
मिलेंगे खाक में लेकिन हमारे गुलबदन पहले॥

न हो कुछ खौफ मरने का न हो कुछ फिक्र जीने की।
अगर ऐ हमदमों मनमें लगी हो एक लगन पहले॥

उन्हीं के सर रहा सेहरा उन्हीं पर ताज कुर्बानी।
जिन्होंने फाड़कर कपड़े रखो सरपर कफन पहले॥

हमारा इंडिया योरुप से भी ले जायगा सबकत।
जो गांधी से मुहब्बाने वतन हों इंडियन पहले॥

न राहतकी करें परवा न हम दौलतके तालिबहों।
करें सब मुल्कपर कुर्बान तन मन और धन पहले॥

तिलक महराज की जयहो उन्होंने यह दिखायाथा ।
कि शुभ कर्मों में होते हैं हमेशा बिरहमन पहले ॥
हमें दुख भोगना लेकिन हमारी नस्ल सुख पावे ।
ये दिल में ठान लें अपने यहां के मर्दजन पहले ॥
मुसीबत या कयामत आ कहां अंजीर जिन्दा हैं ।
यहां तय्यार बैठे हैं गरीबाने वतन पहले ॥

रंग दे बसन्ती चोला

मेरा रंग दे बसन्ती चोला
इसी रङ्ग में गांधी जी ने नमक पर धावा बोला
मेरा रङ्ग दे बसंती चोला
इसी रङ्ग में पेशावर में पठानों ने सीना खोला
मेरा रङ्ग दे बसंती चोला
इसी रङ्ग में रंक शिवा ने मां का बंधन खोला
मेरा रङ्ग दे बसंती चोला
इसी रङ्गमें मदनमुकरजी गवर्नमेंट स्कूलपर धावाबोला
मेरा रङ्ग दे बसंती चोला
इसी रङ्ग में पद्मकांत ने मार्डन स्कूल पर धावा बोला
मेरा रङ्ग दे बसंती चोला

चलाओ चर्खा

निकालो थोड़ा सा वक्त अपना चलाओ चर्खा चलाओ चर्खा ।
जो और थोड़ा सा वक्त पाओ तो बीनों कपड़ा चलाओ चर्खा ॥
जो चाहते हो निजात अपनी तो पहिनो अपने गले में कफनी ।
उठो देश की करो भलाई जो सोवे उसको सिखाओ चर्खा ॥
डरें न योरुप के गन से दम भर पुकार दो आज जाके घर घर ।
मशीनगन जो तुम्हें दिखावे उसे तुम अपना दिखाओ चर्खा ॥
यह विष्णु का चक्र है सुदर्शन कभी न इसको जलील समझो ।
जो चर्खे इकबाल पर हो आना तो पहले घर में चलाओ चर्खा ॥
पड़ा है योरुप में जल जलासा कि हाय सारा तिलस्म टूटा ।
ये किसने कानों में आके फूंका सुआ को रोको चलाओ चर्खा ॥
अगर गुलामी से छूटना हो स्वराज्य की दिल में हो तमन्ना ।
तो खाके मोटा पहन के खद्दर घरों में बैठे चलाओ चर्खा ॥
यह हैं हैं चर्खे की क्या है गोया चमन में बुलबुल चहक रहोहैं ।
या बैठी कूकेहै कोई कोयल कि पियकी खातिर चलाओचर्खा ॥
सुना है दादा भी घर में बैठे चलाया करते हैं अपना चर्खा ।
तो मुझको अब उज़्र क्या है बाकी बस आओ चलाओ चर्खा ॥

हमारी दशा

आंखों से फिर दिखादो भगवन् वही ज़माना।
वह राज्य चक्रवर्ती वह शाने खुसरवाना॥
सन्तान शेर दिल को बस बुज़दिली मिटादो।
भीष्म व भीम सा दो तर्ज़े बहादुराना॥
अर्जुन से तीर अफगन पैदा यहां बशर हों।
तीरे अदू का हर्गिज़ होवे नहीं निशाना॥
हो प्रेम भाइयों में, रामो लषण सा पैदा।
दिखलादो फिर भारत सा तुख्ने बिरादराना॥
आज्ञा में मातु पितु के सब कुछ निसार करदें।
श्रीराम सा दिखादो पितु भक्ति मुख़लिसाना॥
गौतमकणाद आदिकीफिर कुटियांयहां दिखावें।
पढ़नेको मिल सकें फिर तहरीर फ़ख्र-सफाना॥
मिट जांय आन पर फिर राणा प्रताप से हम।
बहरे वतन हों पैदा जज़्बाते आशिक़ाना॥
गृह देवियों के दिल में होवे ख़्याल पैदा।
सीता से प्राणपति से बर्ताव आदिमाना॥

गुरुकुल की वह प्रणाली रायज यहां पर करके ।
कृष्णो सुदामा ऐसा दिखला दो दोस्ताना ॥
शैदाय इक ऋषि सा फिर तो ज़रा दिखा दो ।
तफसीर वेद की हो तकरीर आलिमाना ॥
प्रह्लाद और हकीकत से हो धर्म पर कुर्बां ।
सहते रहे हमेशा हरकाले आसि-माना ॥
"साधिक" बहार आये उजड़े हुए चमन में ।
लब पर हो बुलबुलों के फिर कौम का तराना ॥

हमारी ख्वाहिश

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए कातिल में है ॥
रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
लज्जते सरनाह वरदी दूरये मंजिल में है ॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां ।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिलमें है ॥
अब न अगले वलवलेहैं और न अर्मानोंकी भीड़ ।
सिर्फमिट जानेकी हसरत एकदिले बिस्मिलमेंहै ॥

आज मकतलमें ये काफिर कह रहा है बारबार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्की मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार।
अबतेरी महफिलकाचर्चा कौमकीमहफिलमें है॥

दिल में है

एक दिन देखेंगे हम भी वक्त क्या कातिल में है।
काफिलाये दिल मेरा उम्मीद की मंजिल में है॥
यार की फुर्कत में अब तड़पा नहीं जाता तबीब।
दम निकल जाये यही हसरत दिले बिस्मिल में है॥
मजलिसे माशूक में हैं बन्द आशिक की अदा।
क्या बतायें आज कल जो कुछ हमारे दिल में है॥
आज नाचेगी बरहना तेग़ पे कातिल तेरी।
इसलिये आँबाजों का मजमा तेरी महफिल में है॥
कौम के मजनूं न घबड़ा बन्द दिन तस्कीन रख।
तेरी आजादी की लैला जेल के मयमिल में है॥
एक दिन सर सब्ज होकर यह दिखायेगा समर।
क्या हुआ "सरयू" अगर इस वक्त हानागिल में है॥

प्यारी चक्की

चल चल मेरी चक्की पियारी।

भारत की तू राजदुलारी, तू पित पालन हारी।
कर्खा की तू सगी बहन है, चक्र सुदर्शन मारी॥
हर २ शब्द बुलावे हर को, ध्यावे कृष्ण मुरारी।
मोहन तन धर भारत नैया, देवें पार उतारी॥
वृटिशनीतिकी सत्ता पीसूं, आटाकी मिलसारी।
भारतका दुखदरिद्र पीसूं, होस्वराज्य सुखकारी॥

वीर की संतान

हम वीर की सन्तान हैं हैं वीर बनने के लिये।
हम सिंह सुवन सपूत हैं देश कानन राज हैं।
ये भव्य भारत ही हमारा स्वर्ग का सुरराज है॥
इन गीदड़ों के झुन्ड से हम मित्र डरने के नहीं।
तैयार हैं सुरराज से भी आज लड़ने को कहीं॥
अभिमन्युका अनुराग है प्रह्लाद की हरभक्ति है।
भगवानको ध्रुव सम बुलानेकी हमीं में शक्ति है॥
सुन्दर देशोद्यान के हम कंज कुंज सुवास हैं।
हम प्राण प्यारे देश के हम दास शुभ आस हैं॥

हस्ती मिटा देंगे

तेरी इस जुल्म की हस्ती को ऐ जालिम मिटा देंगे।
जबां से जो निकालेंगे वही करके दिखा देंगे॥

भड़क उठेगी जब सीनये सोजाँ की वह आतिश।
वो हम इक शर्द आह भरकर तुझे जालिम जला देंगे॥

हमारे आह व नालों को तुम बे सूद मत समझो।
जो हम रोने पे आयेंगे तो एक दरिया बहा देंगे॥

हमारे सामने सख्ती है किया इन जेल खानों की।
वतन के वास्ते हम दार पर चढ़ कर दिखा देंगे॥

हमारी फाके मस्ती कुछ न कुछ रंग लाके छोड़ेगी।
निशा तेरा मिटा देंगी तुझे जब यह दुआ देंगे॥

हजारों देश भक्त अब कौमी परवाने हैं जेलों में।
हम उनके वास्ते सब मालोजर अपना लुटा देंगे॥

कुछ इसमें राज था मुद्दत से जो खामोश बैठे थे।
हम अब करने पे आये हैं तो कुछ करके दिखा देंगे॥

अगर कुछ भेंट आजादी की देवी हमसे मांगेगी।
समझकर हम जेह किस्मत सब अपने सर चढ़ा देंगे॥

नहीं मंजूर अब इज्जत हमें सरमाया दारों की।
बना कर शाह कृति को सिंहासन पर बिठा देंगे॥

दमन की पुकार

(१)

अंगुली दिखालो या छिनालो डर दिखालो डर नहीं।
बातें बनालो सब छिनालो कथा कहें उत्तर नहीं॥
पर विश्व के विश्वस्त पथ को आइयो! भूलो नहीं।
उन कल्पनाओं में वृथा मानों ज़रा फूला नहीं।
देखो कहीं ऐसा न हो सुर्य्यास्त हो क्षण मात्र में।
दीखे न वह तेजस्विता फिर इस गात्र में॥

(२)

जिसको दिखाया आपने संसार में सोता हुआ।
कर्तव्य—पथ में हीनता—संयुत पड़ा रोता हुआ॥
सोता हुआ तम-वल्लरी अपने हृदय उद्यान में।
खोता हुआ सिद्धान्त मय सर्वस्व अज्ञान में॥
वह जाग कर यह कह न बैठे मैं बड़ा अतिधीर हूँ।
मैं वीर हूँ! मैं वीर हूँ! मैं वीर हूँ! मैं वीर हूँ!॥

(३)

ये जाति-जीवन-मार्ग बन्धन तोड़ दो आओ कहा।
ये आर्य अपयश भाण्ड को फोड़ दो भाजो कहा॥

इन तीक्ष्णता आक्षेप--तीरों का चलाना छोड़दो।
बहके हुओं का मुख अजी ! अब भी समय है मोड़दो॥
"दैवोपि" दुर्बल घातकः ऐसा न हो प्रतिकूल हो।
जिसको समझते ठीक हो ऐसा न हो कि भूल हो॥

(४)

जातीयता का भाव देखो ! है यहाँ जगने लगा।
प्रान्तीयता का पाप इनको छोड़ कर भगने लगा॥
टूटे हुये वे प्रेम-बन्धन प्रेम से जुड़ने लगे।
भूले हुये सीधे पथों की ओर भी मुड़ने लगे॥
होने लगा देखो न देना दोष तुम पीछे हमें।
प्रेमी हमारे हो इसीसे हम बताते हैं तुम्हें॥

(५)

है दीन भारत ! को जगाने आ चुकी अब भारती।
कल कर किया ही चाहते हैं कार्य विद्यार्थी व्रती॥
ये ब्रह्मचारी--वीर-धारी--आत्म-त्यागी देख लो।
ये वीर नेता ज्ञान चेता गुण विजेता देख लो॥

रुद्ध उन्नति मार्ग मिलकर शीघ्र अपना खोलदो।
होकर हमारे साथ भारतवर्ष की जय बोलदो॥
तीर नहीं शमशीर नहीं धनु बीर नहीं पै हाथ तो हैं।
तुलना नहीं यों मिलना नहीं पै उलझना शेषकी बात तो है॥
सुरताल नहीं वेतार नहीं औ रेल नहीं पै पैर तो हैं।
तलवार नहीं बन्दूक नहीं अरु तोप नहीं पै दाँत तो हैं॥

डा० निरंजन सिंह देव "आर्गनाइज़र संघ" द्वारा
जगदीश प्रेस लखनऊ में मुद्रित।